# श्रीकालभैरवाष्टकं

देवराज सेव्यमान पावनांघ्रि पङ्कजं
व्याल यज्ञ सूत्र मिन्दु शेखरं कृपाकरम् ।
नारदादि योगि वृन्द वन्दितं दिगंबरं
काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ १॥

भानुकोटि भास्वरं भवाब्धि तारकं परं
नीलकण्ठ मीप्सितार्थ दायकं त्रिलोचनम् ।
कालकाल मंबुजाक्ष मक्षशूल मक्षरं
काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ २॥

शूलटंक पाशदण्ड पाणिमादि कारणं
श्यामकाय मादिदेव मक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्र ताण्डव प्रियं
काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ ३॥

भुक्ति मुक्ति दायकं प्रशस्त चारु विग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्त लोक विग्रहम् ।
विनिक्वणन् मनोज्ञहेम किङ्किणी लसत्कटिं
काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ ४॥

धर्मसेतु पालकं त्वधर्म मार्ग नाशकं
कर्मपाश मोचकं सुशर्म दायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्ण शेषपाश शोभितांग निर्मलं

काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ ५॥

रत्नपादुका प्रभाभि रामपाद युग्मकं
नित्य मद्वितीय मिष्ट दैवतं निरंजनम् ।
मृत्युदर्प नाशनं कराल दंष्ट्र भूषणं
काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ ६॥

अट्टहास भिन्नपद्म जाण्डकोश संततिं
दृष्टिपात नष्टपाप जालमुग्र शासनम् ।
अष्टसिद्धि दायकं कपाल मालिकाधरं
काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ ७॥

भूतसंघ नायकं विशाल कीर्ति दायकं
काशिवासि लोकपुण्य पापशोधकं विभुम् ।
नीतिमार्ग कोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ ८॥

कालभैरवाष्टकं पठंति ये मनोहरं
ज्ञानमुक्ति साधनं विचित्र पुण्य वर्धनम् ।
शोकमोह लोभदैन्य कोपताप नाशनं
ते प्रयान्ति कालभैरवांघ्रि सन्निधिं ध्रुवम् ॥

॥ इति श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ श्री कालभैरवाष्टकं सम्पूर्णम् ॥